आपदा राहत शिविर में सैकड़ों ने कराया उपचार

AMAR UJALA FOUNDATION

अमर उजाला फाउंडेशन का ऋषिकेश में राहत शिविर शुरू

अमर उजाला ब्यूरो

ऋषिकेश। अमर उजाला फाउंडेशन की ओर से चारधाम आपदा प्रभावित तीर्थयात्रियों की सहायता के लिए तीर्थनगरी में शुक्रवार को आपदा राहत शिविर विधिवत शुरू हो गया। इस मौके पर सैकड़ों अस्वस्थ यात्रियों ने स्वास्थ्य परीक्षण और उपचार कराया। शिविर में सैकड़ों लोगों को भोजन परोसा गया और टेलीफोन से परिजनों से बात कराई गई। इस दौरान कई लोगों ने अमर उजाला रिलीफ फंड में डिमांड ड्राफ्ट जमा कराए और जरूरतमंदों के लिए कपड़े दिए।

शिविर में सीएमआई देहरादून की चिकित्सकीय टीम ने सैकड़ों अस्वस्थ तीर्थयात्रियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया और निशुल्क दवा वितरित की। इस दौरान रेलवे स्टेशन पर उमड़े यात्रियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई, जिसमें सैकड़ों लोगों को भोजन परोसा गया। इसके साथ ही शिविर में स्थापित किए गए टेलीफोन से काफी संख्या में तीर्थयात्रियों ने अपने घर संपर्क कर परिजनों को अपनी कुशलक्षेम की सूचना दी। यात्रियों ने शिविर में उपलब्ध कराई गई सुविधाओं को सराहा। शुक्रवार को अमर उजाला फाउंडेशन शिविर में अल्का विष्ट ऋषिकेश ने एक हजार रुपये, रविंद्र कुमार अग्रवाल ने 11 सौ रुपये, ममता अग्रवाल ने 11 सौ रुपये और भगवान सिंह ने चार सौ रुपये आपदा से पीड़ित लोगों के लिए डिमांड ड्राफ्ट सौंपे।

अमर उजाला फाउंडेशन की ओर से शिविर में भोजन करते तीर्थयात्री।

अमर उजाला फाउंडेशन की ओर से ऋषिकेश रेलवे स्टेशन पर आयोजित सहायता शिविर में रोगियों की जांच करते चिकित्सक।

गुजरात के डाक्टर आज देंगे सेवाएं

देहरादून। गुजरात से आया चिकित्सीय दल शनिवार (आज) अमर उजाला फाउंडेशन के राहत शिविर में अपनी सेवाएं देगा। दल में शामिल डा. वज्जू भाई ने बताया कि वे सात सदस्यों की टीम के साथ आपदा पीड़ितों की मदद को आए हैं। टीम में डा. हिम्मत बोरा, डा. भद्रेश शाह, डा. अशोक बियानी, डा. बालू भाई शामिल हैं, जो आपदा पीड़ितों का उपचार करेंगे।

अमर उजाला का हरिद्वार में शिविर आज

देहरादून। अमर उजाला फाउंडेशन की ओर से शनिवार को आपदा पीड़ितों की सहायता के लिए हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर शिविर लगाया जा रहा है। शिविर में आईएमए के चिकित्सकों की मदद से आपदा पीड़ितों को चिकित्सीय सहायता दी जाएगी। पहाड़ से लौटे श्रद्धालुओं के लिए नाश्ते और खाने की व्यवस्था भी की गई है।

नई टिहरी में यात्रियों ने सुनाई आपबीती

मेरे सामने ही करीब एक हजार छोटी-बड़े वाहन बहे। मलबे के ढेर में शव साफ नजर आ रहे थे। जिनके शरीर पर प्राण थे, वह राहत के लिए हाथ पांव से सहारा कर अपने जिंदा होने का इशारा कर रहे थे। परंतु कहीं से उन्हें बचाव की कोई किरण नजर नहीं आई। सरकार समय से राहत और बचाव कार्य समय पर शुरू करती तो सैकड़ों जान बचाई जा सकती थी।
- आलोक शर्मा, गाजियाबाद

केदारनाथ के दर्शन के बाद 15 जून सुबह गौरीकुंड लौट रहे थे, तो रास्ते में बारिश का कहर टूट पड़ा। बमुश्किल जान बचाकर सोनप्रयाग तक पहुंचे। हम भाग्यशाली हैं कि अपने सभी साथियों के साथ सकुशल नई टिहरी पहुंच गए हैं। 27 साल पहले भी केदारनाथ के दर्शन करने गए थे। तब व्यवसाय करने वाले लोग यात्रियों को प्यार और स्नेह से देखते थे, पर अब जेबें खाली करने पर ज्यादा जोर है।
- वीके कुश, रुड़की